श्री राम–स्तुति

श्रीरामचन्द्र कृपालु भज मन हरण भवभय दारुणं ।
नवकंज–लोचन, कंजमुख, कर–कंज, पद कंजारुणं ।।

कंदर्प अगणित अमित छबि, नवनील–नीरत–सुंदरं ।
पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं ।।

भजु दीनबंधु दिनेश दानव–दैत्यवंश–निकंदनं ।
रघुनंद आनन्दकंद कौशलचंद दशरथ–नंदनं ।।

सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणं ।
आजानुभुज शर–चाप–धर, संग्राम–जित–खरदूषणं ।।

इति वदति तुलसीदास शंकर शेष–मुनि–मन–रंजनं ।
मम हृदय–कंज निवास कुरु, कामादि ,खल–दल–गंजनं ।।

मनु जाहिं राचेउ मिलिहिं सो बरु सहज सुंदर साँवरो ।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो ।।

एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिह सहित हियँ हरषीं अली ।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली ।।

दोहा– जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि ।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे ।।

।। सियावर रामचन्द्र की जय ।।

जीते जी रक्तदान मरणोपरान्त नेत्रदान